UNIT 2 3

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

सूक्ष्म - शिक्षण -

सूक्ष्म अध्यापन कक्षा-ध्यापन की वास्तविक स्थिति का एक आंशिक रुप है। जिसमें छात्र-अध्यापक कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों का परिचय सूक्ष्म पाठ (Micro Lesson) को पढ़कर प्राप्त करता है। सूक्ष्म-शिक्षण शिक्षक-प्रशिक्षण में बीसवीं शताब्दी की नई देन है। इसका विकास स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी कैलीफोर्निया, यू. एस. ए. में किया गया था है।

सूक्ष्म-शिक्षण की अवधारणा

सूक्ष्म-शिक्षण एक सरलीकृत शिक्षण समागत है। इसके कार्य निम्न हैं।

1- शिक्षण में प्रारम्भिक अनुभव और अभ्यास के रुप में।

2- निश्चित दशाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षण के प्रभाव को खोजने के एक शोध साधन के रुप में।

3→ अनुभवी शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण उपकरण के रुप में जो सामान्यतः 5 मिनट की अवधि के लिए हो, जिसमें 8 छात्रों से अधिक सम्मिलित न हो और बहुधा विश्लेषण के लिए वीडियो टेप पर अंकित किया गया है।

1- कुछ परिभाषाएँ →

सूक्ष्म-शिक्षण की प्रमुख परिभाषाएँ निम्न प्रकार है।

Date: / /

1- डी. डब्ल्यू एलन के अनुसार → "सूक्ष्म से तात्पर्य शिक्षण क्रिया के उस सरलीकृत लघु रूप में जिसे होती कक्षाओं में कम समय में सम्पन्न किया जाता है।"

2- एलन एण्ड ईव → सूक्ष्म शिक्षण को "ऐसी नियमित अभ्यास प्रणाली के रूप में परिभाषित किया ~~काम~~ में किया जा सकता है, जिसके द्वारा विशिष्ट शिक्षण व्यवहारों पर ध्यान देकर नियंत्रित परिस्थितियों में शिक्षण अभ्यास किया जाता है।"

सूक्ष्म-शिक्षण की निम्न विशेषताएँ हैं-

1- इनमें कक्षा कम होती है। कक्षा में छात्रों की संख्या 5 से 10 तक होती है।
2- शिक्षण अवधि 5 से से 10 मिनट तक होती है।
3- एक पीरियड में एक ही कौशल के शिक्षण पर बल दिया जाता है।
4- इसमें अभ्यास प्रक्रिया अधिक नियंत्रित रहती है।
5- इसमें छात्राध्यापक को प्रतिपुष्टि तुरन्त ही प्राप्त होती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

सूक्ष्म-शिक्षण की विधि →

सूक्ष्म - अध्यापन के मूल सिद्धान्त साधारण है। छात्र - अध्यापन एक लघु पाठ तैयार करता है। जिससे विषय - वस्तु के साथ-2 पूर्व निर्धारित विशिष्ट शिक्षण कौशलों पर बल दिया जाता है।

यह लघु पाठ पाँच छात्रों को पाँच से दस मिनट के लिए पढ़ाया जाता है।

भारत में NCERT, नई दिल्ली एम. एस यूनिवर्सिटी, बड़ौदा के कुछ प्रयासों से सूक्ष्म-शिक्षण का भारतीय प्रतिमान विकसित किया गया है जो निम्न प्रकार है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

1-	पाठ नियोजन	
2-	शिक्षण रत	6
3-	प्रतिपुष्टि	6
4	पुनः पाठ नियोजन	12
5-	पुनः शिक्षण रत	6
6 -	पुनः प्रतिपुष्टि	6
		36 मिनट

सूक्ष्म - शिक्षण के सोपान →

सूक्ष्म - शिक्षण के विभिन्न सोपान निम्न है।

1- विशिष्ट कौशल परिभाषीकरण →

इसके अन्तर्गत किसी विशिष्ट कौशल का शिक्षण

Date: / /

व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके साथ उन उद्देश्यों को भी निश्चित किया जाता है, जो इस कौशल को शिक्षण माध्यम से प्राप्त किये जा सकते है।

2- कौशल प्रदर्शन → अब इन शिक्षण कौशलों का प्रदर्शन सूक्ष्म पाठ योजनाओं के माध्यम से किया जाता है। इस कौशल का प्रदर्शन अध्यापक द्वारा या वीडियो टेप के माध्यम से किया जा सकता है।

3→ सूक्ष्म पाठ योजना → इसके अन्तर्गत छात्राध्यापक इन कौशलो के प्रशिक्षण से सम्बन्धित पाठ योजनाएँ तैयार करते हैं। पाठ योजनाएँ लगभग 5-20 मिनट की अवधि के लिए होती है।

4 लघु समूह शिक्षण → इसके अन्तर्गत छात्र अध्यापक छात्रों के छोटे समूह को अध्यापन कार्य कराता है। इस समूह में 5-10 छात्र होते है। इस सोपान के अन्तर्गत छात्र-अध्यापक का शिक्षण कार्य विडियो टेप के रूप में होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

5- प्रतिपुष्टि ⇒ छात्र अध्यापक को प्रदान की गई सूचनाएँ एवं सुझाव ही प्रतिपुष्टि कहलाते हैं।

सूक्ष्म-शिक्षण के लाभ ⇒

* सूक्ष्म शिक्षण के निम्न लाभ है

1- यह शिक्षण कम समय, कम हल तथा कम शिक्षण क्रियाओं की विधि है।

2- शिक्षण कौशलो में दक्षता के लिए प्रभावपूर्ण विधि है।

3- इसमें छात्र-शिक्षक अपने प्रशिक्षण महाविद्यालयों में तथा अपने सहपाठी छात्र शिक्षकों के मध्य व्यावहारिक शिक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

4- इसमें ऑडियो-वीडियो या टेपरिकॉर्ड द्वारा प्रदत्त प्रतिपुष्टि विशेष लाभदायक सिद्ध हुई

सूक्ष्म-शिक्षण की सीमाएँ ⇒

सूक्ष्म-शिक्षण की निम्न सीमाएँ है

1- इसमें शिक्षण कौशल की सिखाना या दक्षता प्राप्त करना मुख्य ध्येय होता है।

2- इसमें समय अधिक लगता है।

3- इसमें समय में केवल एक प्रशिक्षणार्थी ही प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

Date: / /

4- अविलम्ब प्रतिपुष्टि आवश्यक है जो प्रत्येक दशा में सम्भव नहीं है।

5- इसके लिए प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पास टेपरिकॉर्डर, ऑडियो वीडियो टेप तथा बन्द परिपथ टेलीविजन आदि श्रव्य-दृश्य उपकरणों का अभाव है।

04/9/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेपुर, ताजपुर, बलिया